प्राचीन इतिहास,संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर

संगोष्ठी- भारतीय स्वातंत्र्य एवं प्रतिरोध

आज दिनांक 20-02- 2023 को राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाज़ीपुर में प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग तथा भारतीय इतिहास संकलन समिति,काशी के संयुक्त तत्वावधान में "भारतीय स्वातंत्र्य एवं प्रतिरोध" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । संगोष्ठी का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वंदना से हुआ । कार्यक्रम के प्रारंभ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग की असिस्टेंट प्रोफ़ेसर डॉक्टर प्रियंका सिंह ने भारतीय इतिहास संकलन समिति के उद्देश्य एवं कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारतीय इतिहास संकलन समिति प्रामाणिक तथ्य परक एवं सर्वांगीण इतिहास लेखन की दिशा में कार्यरत विद्वतजनो एवं इतिहासविदों का संगठन है । पहले अंग्रेज़ तत्पश्चात अंग्रेज़ी मानसिकता रखने वाले लेखकों द्वारा भारत के गौरवशाली इतिहास को विकृत करने का प्रयास किया गया । उनके द्वारा लिखा गया इतिहास वैज्ञानिक एवं वस्तुपरक के नाम पर पूर्वाग्रह से ग्रसित एवं भारतीय स्रोतों की उपेक्षा पर आधारित है । वर्तमान में भारतीय इतिहास संकलन समिति के नेतृत्व में सत्यान्वेषी एव प्रामाणिक इतिहास की निर्मिति का क्रम चल रहा है । संगोष्ठी की दूसरी विशिष्ट वक्ता डॉ. अनिता सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर इतिहास आर्य महिला पी. जी. कॉलेज वाराणसी ने "समावेशी राष्ट्रवाद: एक नया प्रतिमान" विषय पर अपने व्याख्यान में कहा कि विभिन्न रंगों और जीनों के लोगों को समायोजित और समाहित करके सभ्यताएँ युगों पूर्व अस्तित्व में आई हैं और उन्होंने सहनिवास और सह-अस्तित्व को सीखा है तथा धीरे-धीरे एक सामाजिक बंधन और राजनीतिक पहचान विकसित की है और इसकी चरम अभिव्यक्ति राष्ट्रवाद है । यह एक अमूर्त अवधारणा है लेकिन राष्ट्रवाद का बंधन बाहरी आक्रमणों को झेलने के लिए पर्याप्त ठोस है। राष्ट्रवाद, राष्ट्रीयता, राष्ट्रचिंतन समर्पण, प्रतिबद्धता, गर्व और वफादारी की सर्वोच्च पराकाष्ठा हैं। यह अंतहीन प्रयासों, मातृभूमि के लिए वीरों के बलिदान की गाथा है। आधुनिक राष्ट्रवाद या राष्ट्र राज्यों का यूरोप -केंद्रित मॉडल सामान्य क्षेत्र, सामान्य नस्ल, सामान्य भाषा और सामान्य इतिहास के सिद्धांत द्वारा निर्देशित है और केवल पश्चिम की साम्राज्यवादी धारणाओं का समर्थन करता है। राष्ट्र का यह सिद्धांत एक दम घुटने वाले तंग डिब्बे की तरह है जिसमें वस्तुतः कोई वातायन नहीं है । यूरोपीय राष्ट्रवाद का यह अनन्य मॉडल राष्ट्रवाद के समावेशी भारतीय सिद्धांत के बिल्कुल विपरीत है, जो हमेशा सह-अस्तित्व, वसुधैव कुटुम्बकम के विचार पर खरा उतरा है। यूरोप के यूटोपिया का विचार भी उतना ही भ्रामक है जहां विभिन्न राष्ट्र-राज्यों के लोगों की पहचान उनके राष्ट्रीय पहनावे और झंडे से की जा रही

20.02.23

Dr. Vikash Singh
Assistant Professor
Ancient History
Govt. Girls P.G. College
Ghazipur

प्राचार्या
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गाजीपुर-233001